


भारत

# वह औरत जिसे चीथड़ा कहा गया

गर्भवती हालत में घर से निकाल दी गई सिंधुताई सपकाल ने भीख माँगी। आगे चलकर उन्होंने एक हज़ार से ज़्यादा बच्चों को पाला।

---

**कहाँ** पुणे

**कौन** सिंधुताई सपकाल, महाराष्ट्र की एक समाजसेविका, जिन्हें “माई”, अनाथों की माँ, कहा जाता था

**कब** 1948 से 2022

4 मिनट में पढ़ें

पहला अध्याय

# कहानी

सिंधुताई सपकाल का जन्म 1948 में भारत के महाराष्ट्र में एक ग़रीब परिवार में हुआ। उनके माता-पिता को बेटा चाहिए था, इसलिए उन्होंने उन्हें “चिंधी” कहा, जिसका मतलब है कपड़े का चीथड़ा। बचपन में ही उनकी शादी एक बहुत बड़ी उम्र के आदमी से कर दी गई, और वे बहुत कम उम्र में माँ बन गईं।

उन्होंने दूसरों के लिए न्याय की आवाज़ उठाई। इसके लिए उन्हें गर्भवती हालत में घर से निकाल दिया गया। उन्होंने अकेले बच्चे को जन्म दिया। उन्होंने बाद में बताया कि यह एक गोशाला में हुआ, और उन्होंने नाल पत्थर से काटी। फिर वे खाने के लिए भीख माँगती रहीं और कभी-कभी श्मशान में सोईं।

## उन बच्चों की माँ जिन्हें कोई नहीं चाहता था

अपनी यात्राओं में उन्हें ऐसे बच्चे मिले जिन्हें अकेला छोड़ दिया गया था। एक लड़का भीख माँग रहा था। सिंधुताई ने उसकी देखभाल करने का फ़ैसला किया। जल्द ही और बच्चे आ गए, और वे उन सबको खिलाने के लिए और ज़्यादा भीख माँगने लगीं।

*Wikipedia* के मुताबिक़ उन्होंने अपनी बेटी को पुणे के एक ट्रस्ट को दे दिया। वे अपने बच्चे को बाक़ियों से ऊपर नहीं रखना चाहती थीं।

> वे अनाथ नहीं हैं। मैं उनकी माँ हूँ।
>
> सिंधुताई सपकाल, The Federal के हवाले से

**1,000+**
पाले गए बच्चे, सबसे कम अनुमान के अनुसार

**4**
महाराष्ट्र में उनके बनाए अनाथालय

**2021**
जिस साल उन्हें पद्मश्री मिला, भारत का एक बड़ा नागरिक सम्मान

## एक परिवार जो बढ़ता गया

लोग उन्हें “माई” कहने लगे, जिसका मतलब है माँ। उन्होंने महाराष्ट्र में चार अनाथालय बनाए। बच्चों को खाना, कपड़े और स्कूली पढ़ाई मिली। उन्हें लड़कियों से ख़ास लगाव था, क्योंकि उनके अपने माता-पिता उनके लड़की होने पर नाराज़ थे। उन्होंने पुरस्कार की राशि से बच्चों के घर के लिए ज़मीन ख़रीदी।

जब पूछा गया कि उन्हें क्या चलाए रखता है, तो उन्होंने कहा, “जब हालात मुश्किल होते हैं, तो मज़बूत लोग आगे बढ़ते हैं।” उनके कई बच्चे डॉक्टर, वकील और अफ़सर बने। “आज मेरे बच्चे डॉक्टर, वकील और बड़े अफ़सर भी बन गए हैं,” उन्होंने गर्व से कहा।

2021 में उन्हें पद्मश्री मिला। 4 जनवरी 2022 को पुणे में दिल का दौरा पड़ने से उनका निधन हो गया। उनकी बेटी ममता ने उनका काम जारी रखने का वादा किया है, *The Federal* बताता है।

## कब क्या हुआ

- **1948** सिंधुताई का जन्म महाराष्ट्र में होता है और उन्हें “चिंधी” कहा जाता है।
- **2010** उनके जीवन पर फ़िल्म मी सिंधुताई सपकाल लंदन फ़िल्म फ़ेस्टिवल में दिखाई जाती है।
- **2021** उन्हें पद्मश्री मिलता है।
- **2022** 4 जनवरी को पुणे में उनका निधन हो जाता है।

दूसरा अध्याय

# यह कहानी ख़ास क्यों है

उनके पास लगभग कुछ नहीं था, फिर भी उन्होंने एक और बच्चे को खिलाना चुना।

उनके बच्चों की सही गिनती अनिश्चित है। स्रोत इस पर सहमत हैं कि वह एक हज़ार से ज़्यादा थी।

**हमारी राय**

सिंधुताई ने अपने छोड़े जाने को उन बच्चों के घर में बदल दिया जिन्हें कोई नहीं चाहता था।

**तीसरा अध्याय**

# हम क्या सीख सकते हैं

## 1 अपने दर्द से रास्ता लीजिए

सिंधुताई ख़ुद छोड़ी गई थीं, और उन्होंने छोड़े गए बच्चों की देखभाल करना चुना।

**यह आज़माएँ:** अपने जीवन का कोई कठिन समय सोचिए। पूछिए कि अब वह किसके सामने है, और आप कैसे मदद कर सकते हैं।

## 2 एक व्यक्ति से शुरू कीजिए

उनका काम भीख माँगते एक लड़के से शुरू हुआ।

**यह आज़माएँ:** इस हफ़्ते एक व्यक्ति की मदद कीजिए, और पूरे मन से कीजिए।

## 3 खाने से ज़्यादा दीजिए

उनके बच्चों को पढ़ाई मिली, और कई डॉक्टर और वकील बने।

**यह आज़माएँ:** जब मदद करें, तो कुछ टिकाऊ जोड़िए, जैसे कोई हुनर या सीख।

## 4 दूसरों को अपना मानिए

उन्होंने कहा, “वे अनाथ नहीं हैं। मैं उनकी माँ हूँ।”

**यह आज़माएँ:** अपने परिवार के बाहर किसी की देखभाल वैसे कीजिए जैसे अपने की करते हैं।

साथ ले जाने वाली एक बात

## उन्हें चीथड़ा कहा गया, और उन्होंने उन बच्चों से एक परिवार बनाया जिन्हें कोई नहीं चाहता था।

# स्रोत (अंग्रेज़ी में)


**The Federal**
Sindhutai was alone yet she gave new life to more than 2,500 orphans (2022)

**British Association of Social Workers**
India mourns social worker dubbed 'mother of orphans' (2022)

**Wikipedia**
Sindhutai Sapkal


**तथ्य-जाँच नोट:** स्रोत मुख्य कहानी पर सहमत हैं और कई ब्योरों में अलग हैं, इसलिए कहानी उसी पर टिकती है जो कम से कम दो स्रोत कहते हैं। जन्म: Wikipedia 14 नवंबर 1948, वर्धा ज़िले के पिपरी मेघे को बताता है; BASW महाराष्ट्र का पिंपरी गाँव कहता है; The Federal उनके संघर्ष पुणे के एक गाँव में बताता है; कहानी सिर्फ़ "महाराष्ट्र" कहती है। उनका नाम "चिंधी": Wikipedia कहता है कि इसका मतलब कपड़े का टुकड़ा है; The Federal कहता है कि इसका मतलब कुछ नहीं है और उनके माता-पिता को बेटा चाहिए था; कहानी "कपड़े का चीथड़ा" कहती है। शादी की उम्र और पति की उम्र: Wikipedia कहता है 12 और लगभग 20 साल बड़े; BASW कहता है 12 और 30 साल का; The Federal कहता है नौ और 20 साल बड़े; कहानी सिर्फ़ इतना कहती है कि बचपन में उनकी शादी एक बहुत बड़े आदमी से कर दी गई। उनके बच्चे: The Federal कहता है कि वे 18 साल तक तीन बच्चों की माँ थीं और चौथे से गर्भवती थीं; BASW कहता है 20 साल तक तीन बच्चे और चौथे से गर्भवती; Wikipedia कहता है कि उन्हें 20 साल की उम्र में एक बेटी के साथ निकाला गया; कहानी सिर्फ़ इतना कहती है कि वे बहुत कम उम्र में माँ बनीं और गर्भवती हालत में निकाल दी गईं (BASW, The Federal)। उन्हें क्यों निकाला गया: BASW कहता है कि एक ज़िला कलेक्टर को नाराज़ करने के बाद, क्योंकि वे न्याय के लिए आंदोलन कर रही थीं; The Federal कहता है कि महिला मज़दूरों के लिए उचित मज़दूरी और सम्मान माँगने के बाद, जब एक ज़मींदार ने अफ़वाहें फैलाईं; Wikipedia कहता है कि उनके पति ने उन्हें हिंसक तरीक़े से निकाल दिया; कहानी "दूसरों के लिए न्याय की आवाज़ उठाने के लिए" कहती है, जो पहले दो से मेल खाता है। गोशाला में अकेले जन्म और पत्थर से नाल काटना उनका अपना बयान है जो The Federal में उद्धृत है; BASW कहता है कि उन्होंने अकेले जन्म दिया। भीख माँगना और श्मशान में सोना: The Federal और BASW। भीख माँगता लड़का The Federal से है; Wikipedia उन्हें चिखलदरा में भीख माँगते बताता है और कहता है कि उन्होंने छोड़े गए बच्चों को अपनाया; कहानी के पिन वर्धा

(जन्म का ज़िला), चिखलदरा और पुणे दिखाते हैं। अपनी बेटी को पुणे के ट्रस्ट को देना ताकि पक्षपात न हो, यह सिर्फ़ Wikipedia से है, इसलिए कहानी इसे उसी के नाम से कहती है। बच्चों की संख्या: BASW कहता है 1,000 से ज़्यादा; Wikipedia कहता है 1,500 से ज़्यादा; The Federal कहता है 2,500 से ज़्यादा; कहानी “एक हज़ार से ज़्यादा” और “1,000+” कहती है, यानी सबसे कम अनुमान। अनाथालय: The Federal और BASW महाराष्ट्र में चार कहते हैं; Wikipedia अलग-अलग नामों वाले कई घर गिनाता है। “माई” Wikipedia और The Federal में है। उद्धरण “वे अनाथ नहीं हैं। मैं उनकी माँ हूँ।” और “आज मेरे बच्चे डॉक्टर, वकील और बड़े अफ़सर भी बन गए हैं” The Federal से हैं, जो दूसरा और “जब हालात मुश्किल होते हैं, तो मज़बूत लोग आगे बढ़ते हैं” मराठी में अंग्रेज़ी अनुवाद के साथ देता है; लड़कियों से उनका ख़ास लगाव और माता-पिता की नाराज़गी भी The Federal से हैं; BASW डॉक्टर, इंजीनियर और चार्टर्ड अकाउंटेंट कहता है। पुरस्कार की राशि से ज़मीन ख़रीदना Wikipedia से है। 2021 में पद्मश्री तीनों स्रोतों में है। 4 जनवरी 2022 को पुणे में दिल के दौरे से निधन Wikipedia और The Federal में है; उनकी उम्र 73 (Wikipedia, जो उनकी जन्म तारीख़ से मेल खाती है), 74 (BASW) और 75 (The Federal) दी गई है; कहानी कोई उम्र नहीं देती। उनकी बेटी ममता का काम जारी रखने का वादा The Federal से है। 2010 की फ़िल्म Wikipedia और The Federal में है। हम BBC, The Hindu या Indian Express के पन्ने (404) और YourStory (403) नहीं खोल सके, और हम उनके निजी बयान को स्वतंत्र रूप से जाँच नहीं सके, इसलिए उनके शब्द The Federal के नाम से दिए गए हैं। “हमारी राय” वाली पंक्तियाँ हमारी अपनी व्याख्या हैं। बाकी सब ऊपर दिए स्रोतों से है।